P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-I*September-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

भारतीय संस्कृति और पर्यावरण चेतना

सारांश

पर्यावरण चेतना भारतीय संस्कृति की प्राचीन धरोहर है। परम्पराओं और रीति–रिवाजों में इसे आज भी देखा जा सकता हैं। यर्जुवेद में वृक्षों को नमन कर कहा गया है, वृक्षेभ्यः हरि केशेभ्यो पशुनां पतये नमः। अर्थात् हरे केशों वाले वृक्षों को जो, प्राणियों की रक्षा करते है, नमन है। इसमें वृक्षो का मानवीयकरण करते हुये उनकी उपयोगिता बतायी गयी है। [1–] अट्ठारवीं सदी के जर्मन दार्शनिक विचारक इमेनुअल काण्ट तथा वान हाम्बोल्ट ने मानव को पर्यावरण की उपज कहा।आज के वैज्ञानिक युग में हम दिन दोगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रहे है, परन्तु साथ ही साथ आज मानव को यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि प्रगति के साथ ही विनाश भी निरन्तर चल रहा है। पिछले 50 वर्षो मे विश्व स्तर पर हुए तीव्र औद्योगिकीकरण के कारण पर्यावरणीय असंतुलन की जो स्थितियॉ पैदा हुई इसका पूर्वभास 1970 के दशक के उत्तरार्द्ध मे मानवाधिकार वादी संगठनों द्वारा किया जाने लगा। विश्व समुदाय में पर्यावरण के असंतुलन पर लगातार चिंता व्यक्त किए जाने के बाद 1972 में संयुक्त राष्ट्र मानव पर्यावरण सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन मे भारत का प्रतिनिधित्व तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गॉधी ने किया था। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहलीबार पर्यावरण जागरूकता से संबंधित सभी आंदोलनों के लिये इस सम्मेलन में पारित संकल्पो ने आधार भूमि का काम किया। इसलिये भविष्य के लिये अच्छा यही होगा कि आधुनिक और प्रगतिशील बनने के लिये प्रकृति को दॅाव पर न लगाये जैसाकि पर्यावरण प्रहरी श्री सुन्दर लाल बहुगुणा ने वृक्षों के उपकारों के बारे मे एक नारा दिया था।

" क्या है जंगल का उपकार, मिट्टी पानी और बयार,
मिट्टी पानी और बयार, जिन्दा रहने के आधार "।

मुख्य शब्द : आधुनिककीकरण, औद्योगिकीकरण, उत्तरार्द्ध , वैश्विक तपन, उत्सर्जन, लुप्तप्रायजीव,

मीनाक्षी व्यास
विभागाध्यक्ष ,
समाजशास्त्र विभाग,
आर0एस0जी0यू0 पी0जी0कालेज
पुखरायॅा,

वैशाली चौहान
भू0पू0 प्रवक्ता,
भूगोल विभाग,
आर0एस0जी0यू0 पी0जी0कालेज
पुखरायॅा,

प्रस्तावना

पर्यावरण चेतना भारतीय संस्कृति की प्राचीन धरोहर है। परम्पराओं और रीति–रिवाजों में इसे आज भी देखा जा सकता हैं। विवाह के समय विभिन्न रीतियों के साथ ही बरात प्रस्थान के समय कुॅआ पूजन की परम्परा, बगीचा लगवाने का वचन इस बात का साक्षी है कि हमारे पूर्वजों ने प्रकृति की महत्ता को हमसे बेहतर समझ लिया था वृक्षों का सम्मान करना उनकी पूजा करना इसी तरह उनकी रक्षा के उपाय करना भारतीय संस्कृति में ही निहित है। भारतीय मनीषीयों को प्रकृति और मानव की आपसी निर्भरता का अनुभव था। यही कारण है कि भारतीय अध्यात्म में प्रकृति को ही माता और वृक्षों को देवता मानकर पूजा जाता है। यर्जुवेद में वृक्षों को नमन कर कहा गया है, वृक्षेभ्यः हरि केशेभ्यो पशुनां पतये नमः। अर्थात् हरे केशों वाले वृक्षों को जो, प्राणियों की रक्षा करते है, नमन है। इसमें वृक्षो का मानवीयकरण करते हुये उनकी उपयोगिता बतायी गयी है। [1–] अट्ठारवीं सदी के जर्मन दार्शनिक विचारक इमेनुअल काण्ट तथा वान हाम्बोल्ट ने मानव को पर्यावरण की उपज कहा। अमेरिकन भूगोलविद एलेन चर्चिल सेम्पल ने भी मानव के सम्पूर्ण क्रियाकलापों पर पर्यावरण के नियन्त्रण को स्वीकार किया। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात औद्योगिक क्रान्ति का शुभारम्भ हुआ। इस औद्योगिक क्रान्ति ने यह सन्देश प्रस्तुत किया कि प्रकृति व्यापार की वस्तु है। इससे जनमानस के दृष्टि कोण मे परिवर्तन आया, उसने प्रकृति का दोहन करना प्रारम्भ कर दिया। [2–] पर्यावरण शब्द को **Universal Encyclopaedia** इस प्रकार पारिभाषित करता है, ''उन सभी दशाओं संगठन एवं प्रभावों का समग्र जो किसी जीव या प्रजाति के उद्भव, विकास एवं मृत्यु को प्रभावित करती है, पर्यावरण कहलाती है।'' " **The Sum Total of all conditions agencies and influences which affect the development, growth, life and death of an organism, species or race**

is called environment." इससे स्पष्ट है कि पर्यावरण के अन्तर्गत विभिन्न तत्वों को शामिल किया जाता है, जो आपस में निरन्तर क्रिया–प्रतिक्रिया करते रहते है तथा इसी के परिणामस्वरूप जीवन का विकास होता है। पर्यावरण अनेक तत्वों का मुख्यतः प्राकृतिक तथ्यों का समूह है जो जीव जगत को एकाकी तथा सामूहिक रूप से प्रभावित करता है। मनुष्य हो या अन्य जीव जन्तु सभी पर्यावरण की उपज है, उनकी उत्पत्ति, विकास, वर्तमान स्वरूप एवं भावी अस्तित्व सभी पर्यावरण की परिस्थिति पर ही निर्भर है।

अध्ययन की आवश्यकता

आज के वैज्ञानिक युग में हम दिन दोगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रहे है, परन्तु साथ ही साथ आज मानव को यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि प्रगति के साथ ही विनाश भी निरन्तर चल रहा है। दुनिया के सभी देशों के सामने जलवायु परिवर्तन, पृथ्वी का बढ़ता तापमान, कही पर सूखा तो कही पर बाढ़ की समस्या, पिघलते ग्लेशियर, इन सबसे विकराल समस्या उत्पन्न हो रही है। तापमान में वृद्धि का एक प्रमुख कारक ताप बिजली घर व औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाली गर्म हवा और इनके बाद निकलने वाला गर्म पानी, यह गर्म पानी नदियों में मिला दिया जाता है, जिसके फलस्वरूप इसमे रहने वाले जलीय जीवों का जीवन संकट में आ जाता है अमेरिका में प्रकाशित पत्रिका में छपी रिर्पोट के अनुसार पृथ्वी के तापमान में वृद्धि के कारण मानव शरीर में डीहाइड्रेशन की समस्या बढ़ रही है, इसके कारण गुर्दे मे पथरी की समस्या बढ़ रही है $^{3-}$ आज पृथ्वी जिस दौर से गुजर रही है उसे इस हाल में पहुचॅाने के लिये मानव ही जिम्मेदार है। निरंतर होने वाली प्राकृतिक आपदाओं से जन–धन की हानि के कारण होने वाले परिवर्तन को जानने के उद्देश्य से यह अध्ययन किया गया।

उपकल्पना

बढ़ते हुये विकास ने व्यक्ति के मूल्यों में परिवर्तन कर दिया है विकास ही व्यक्ति के विनाश का कारण है। आधुनिकीकरण भारतीय संस्कृति के मूल्यों के हास का कारण है।

अध्ययन की विधि

द्वितीयक सामग्री द्वारा तथ्यों का सग्रह तथा उनका विश्लेषण किया गया है।

प्रकृति को पूजना उनको देवताओं से जोड़ना ये कोई अंधविश्वास नहीं है। भारतीय परम्पराओं के आधार सदैव ही तर्क पूर्ण रहे है। ऋग्वेद में भी मन्त्रों के माध्यम से ये बताने का प्रयास किया गया है कि वन अपने ऊपर स्तूप बनाकर वर्षा के मेघो को अपनी ओर खींचते है। वैज्ञानिकता को समान्य जन तक पहुॅचाने के लिये लोगो मे प्रचलित सामान्य उपायों का सहारा लिया गया और तथ्यों को परम्परा बना कर अनिवार्य कर दिया गया। मानव जीवन के लिये आवश्यक वनस्पतियॉ जैसे तुलसी, पीपल नीम, बरगद आदि को पूज्य मानकर संरक्षित किया गया। दीर्घ जीवी वृक्षारोपण को पाप दोष से मुक्ति का माध्यम बता कर लोगों को पौधे लगाने के लिये बाध्य किया गया। बराह पुराण में भी इसका उल्लेख मिलता है। इसके अनुसार जो कोई पीपल, नीम या बरगद का एक वृक्ष, अनार या नारंगी के दो वृक्ष या फिर आम के पॉच या लताओं के दस वृक्ष लगाता है उसे कभी–भी नरक नहीं भोगना पड़ता है। इसलिये कहा भी गया है जीवन +जीव़ वन। भारतीय संस्कृति का जन्म जंगलो में हुआ इसलिये इसे अरण्य संस्कृति भी कहा गया। आयुर्वेद में प्रत्येक वनस्पति को औषधीय गुणों से युक्त माना गया है।

प्रमाणित रूप से तुलसी का पौधा हानिकरक जीवाणुओं से रक्षा करता है इसके आस–पास की वायु स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम मानी जाती है नीम के संर्दभ मे भी यही कहा जाता है इन दोनो का एक–एक हिस्सा सम्पूर्ण औषधीय है। भारतीय समाज और संस्कृति मे हरियाली के साकारात्मक प्रभावों को बनाये रखने के लिये इन परम्पराओं का जन्म हुआ। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। इसे रोका या बदला नही जा सकता है। जैसे–जैसे विकास के पायदान मानव चढ़ता चला गया वैसे–वैसे वह अपनी जड़ो से दूर होने लगा। परम्पराओं को बोझ बताकर उनसे दूर होता गया। आधुनिककीकरण के कारण हाने वाले विकास ने व्यक्ति के मूल्यों में परिवर्तन कर दिया।

1976 पूर्व तक भारत के संविधान में पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन से संबंधित कोई प्रावधान नही था। संविधान के भाग 4 के अनुच्छेद 47 में लोक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुये राज्य के लिये जो निर्देश दिया गया है वह इस प्रकार है–राज्य अपने लोगो के पोषाहार स्तर और जीवन स्तर को ऊॅचा करने तथा लोक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्राथमिक कर्तव्यो में मानेगा और राज्य, विशिष्टतया मादक पेयों तथा स्वास्थ्य के लिये हानिकारक औषधियों के औषधीय प्रयोजनों से भिन्न, उपयोग का प्रतिषेध करने का प्रयास करेगा।

वास्तव मे आज से लगभग 65 वर्ष पूर्व जिस काल में भारतीय संविधान निर्माण की प्रक्रिया में था तब पर्यावरण अंसतुलन की वे स्थितियॉ नहीं पैदा हुई थी जो आज विकराल रूप मे हमारे सामने है। पिछले 50 वर्षो मे विश्व स्तर पर हुए तीव्र औद्योगिकीकरण के कारण पर्यावरणीय असंतुलन की जो स्थितियॉ पैदा हुई इसका पूर्वभास 1970 के दशक के उत्तरार्द्ध मे मानवाधिकार वादी संगठनों द्वारा किया जाने लगा। विश्व समुदाय में पर्यावरण के असंतुलन पर लगातार चिंता व्यक्त किए जाने के बाद 1972 में संयुक्त राष्ट्र मानव पर्यावरण सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन मे भारत का प्रतिनिधित्व तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गॉधी ने किया था। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहलीबार पर्यावरण जागरूकता से संबंधित सभी आंदोलनों के लिये इस सम्मेलन में पारित संकल्पो ने आधार भूमि का काम किया। इस सम्मेलन में पारित दो प्रमुख संकल्प इस प्रकार है (क) सुव्यवस्थित जीवन के लिये मानव को उपयुक्त वातावरण प्राप्त करने का अधिकार (ख) भावी पीढ़ी को उपयुक्त वातावरण प्रदान करने हेतु पर्यावरण की सरक्षा । इन दो संकल्पों के साथ–साथ इस घोषणा पत्र मे वन्य जीव एवं उनके आवास का संरक्षण समुद्री पर्यावरण संरक्षण तथा

पर्यावरणीय शिक्षा पर विशेष ध्यान देने पर बल दिया गया।

कहने की आवश्यकता नही स्टाक होम घोषणा पत्र ने विश्व स्तर पर न केवल पर्यावरण संबंधी जागरूकता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई बल्कि पर्यावरण विधि और पर्यावरण शिक्षा जैसे नए विषयों को जन्म भी दिया। इतना ही नहीं इस घोषणा पत्र ने वन तथा वन्य जीव संरक्षण के क्षेत्र में भी नए विचारों को आधार देने का काम किया [4–] 1992 मे ब्राजील के रियोडि जिनेरो मे एक पृथ्वी सम्मेलन हुआ जिसमें धरती को बचाने की बात कही गयी। इस सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन पर बृहद चर्चा करते हुये औद्योगिक देशों को वैश्विक तपन के मौजूदा स्वरूप के लिये जिम्मेदार मानते हुये ग्रीन हाउस गैंसो के उत्सर्जन पर रोक लगाने की बात कही गई। वैश्विक तपन अर्थात वायुमंडल में ग्रीन हाउस गैसों का विस्तार Co_2, मिथेन, नाइट्रस आक्साइड, ओजोन जैसी 6 गैसों को ग्रीन हाउस गैस कहा जाता है। इसमें से Co_2 पर्यावरण के लिये सबसे अधिक खतरनाक है। इन गैसो के उत्सर्जन से धरती का तापमान बढ़ रहा है। इसके कारण विभिन्न समस्यायें जैसे–ओजोने परत में छिद्र, समुद्र स्तर में वृद्धि, भू जल का विषैला होना, ध्रुवों की बर्फ का पिघलना वन क्षेत्रों का सिकुड़ना, लुप्तप्रायजीव जैसी समस्याये उत्पन्न हो रही है [5–]

निष्कर्ष :– लगातार होने वाली प्राकृतिक आपदाये ये संकेत दे रही है कि मनुष्य ने प्रकृति के संतुलन को बिगाड दिया है। केदारनाथ में हुई प्राकृतिक आपदाओं ने दिलो में दहशत पैदा कर दी। धरती का स्वर्ग कहलाने वाली कश्मीर घाटी इस समय बाढ़ की आपदा से जूझ रही है। कश्मीर ही नहीं उत्तर भारत, नेपाल, पाकिस्तान के कई हिस्सो में नदियों का जो रोद्र रूप इन दिनों दिख रहा है। उनमे से ज्यादातर हिमालय की पर्वत श्रेणियों से ही निकलती है। ''प्रगति की दौड़ में पर्यावरण की परेशानियों को भुला दिया गया है। हिमालय से दूर महाराष्ट्र का मालीन गॉव जहॉ कुछ माह पहले वन विहीन पहाड़ का मलवा पूरे गॉव को लील गया [6–]

हिमालय का पर्यावरण कमजोर पड़ चुका है यहॉ मानसून का स्वागत नहीं होता। विकास के नाम पर अंधाधुंध सड़को ने गॉव को जोड़ने से ज्यादा तोड़ने का काम किया है। हिमालय से निकलने वाली हर जल धारा को विद्युत ऊर्जा का श्रोत मानकर जल विद्युत परियोजनाओं ने इस महान पर्वत को छिन्न–भिन्न कर दिया है। सरकारे भी विकास के बड़े दबाबो मे पर्यावरण संरक्षण से कतराती है। उनके लिये विकास का सबसे बड़ा विरोधी पर्यावरण ही है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अनुसार दुनिया के सागरों मे जहरीला कचडा मिलने के कारण 'डेड जोन' बढ़ते जा रहे है। इससे मूंगे की चट्टाने नष्ट हो रही है। मछली पकडने के क्षेत्र घटते जा रहे है। सयुक्त राष्ट्र शरणार्थी सेवा एजेन्सियों का अनुमान है कि केवल मौसमी बदलाव के कारण बेघरवार हुये लोगो की संख्या जो 2010 में 5 करोड थी 2050 में बढ़कर 20 करोड हो जायेगी [6–]प्राप्त तथ्यो के विश्लेषण से स्पष्ट है कि प्रकृति से की गई छेडछाड़, उसकी अनदेखी मानव मात्र के लिये मुश्किले उत्पन्न कर रही है। जब भी कोई प्राकृतिक आपदा आयेगी भले ही वो देश के किसी कोने में ही क्यों न हो उसका असर न सिर्फ पूरे देश पर बल्कि पूरी दुनिया पर पडेगा, क्योंकि मैदानी इलाको में बहने वाली तमाम नदियॉ यहॉ से अपनी यात्रा शुरू करती है। नदियों द्वारा लायी गयी उपजाऊ मिट्टी मैदानी इलाकों मे हरियाली लाती है। मिट्टी, हवा, जल जैसे जीवन के सारे आधार प्रकृति की ही देन है। वन से आच्छादित पर्वतीय क्षेत्र ही देश की प्राण–वायु व पानी का सबसे बड़ा कारक है। देश की 65 प्रतिशत जनता यही से जीवन दान पाती है। एसे में यदि पारिस्थितकी बिगड़ती है, जैसा की हो रहा है तो इसका असर देश के जन–जीवन पर अवश्य पडेगा। इसलिये भविष्य के लिये अच्छा यही होगा कि आधुनिक और प्रगतिशील बनने के लिये प्रकृति को दॉव पर न लगाये जैसाकि पर्यावरण प्रहरी श्री सुन्दर लाल बहुगुणा ने वृक्षों के उपकारों के बारे मे एक नारा दिया था।

''क्या है जंगल का उपकार, मिट्टी पानी और बयार, मिट्टी पानी और बयार, जिन्दा रहने के आधार ''।

सन्दर्भ सूची

1. परीक्षा मंथन–भारतीय संस्कृति और पर्यावरण चेतना, पृष्ठ संख्या –148 संस्करण 2005–06
2. पारिस्थतिकी एवं पर्यावरण, ज्ञान भारती पब्लिर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद पर्यावरण जैविकी पृष्ठ सं0–21
3. परिक्षा मंथन, भारत की राज्य व्यवस्था एवं संविधान पृष्ठ सं0–65 संस्करण 2005
4. कमजोर होती जिन्दगी की परत– स्वामी चिदानंद सरस्वती– दैनिक जागरण 16 सितम्बर 2014 पृष्ठ–8
5. जलवायु परिवर्तन कुछ महत्वपूर्ण तथ्य– अवस्थी सुरेश योजना जनवरी 2010 पृष्ठ सं0–43
6. क्यों जरूरी है हिमालय को बचाना,–जोशी अनील प्रकाश पर्यावरणविद्, हिन्दूस्तान, कानपुर–09 सितम्बर 2014 पृष्ठ सं0–12
7. ग्लोबल वार्मिंग, कादम्बनी, जनवरी 2013 पृष्ठ सं0–12
8. बहुगुणा सुन्दर लाल, पर्यावरण और विकास, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1997 पृष्ठ सं0–4